अंक : 8, मई 2024, वर्ष 1

भाषाघर

भाषा, साहित्य और संस्कृति के लोकतंत्र का सहकार

तृतीयलिंगी विमर्श विशेषांक

शोध संवाद समूह, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ की प्रस्तुति

अंक : ४

भाषाघर

(भाषा, साहित्य और संस्कृति के लोकतंत्र का सहकार)

❖ **संरक्षक**

प्रो. आनंद कुमार त्यागी
माननीय कुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

प्रो. निरंजन सहाय
पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

प्रो. राजमुनि
अध्यक्ष
हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

❖ **सह संरक्षक**

डॉ. अविनाश कुमार सिंह
डॉ. विजय कुमार रंजन

❖ **संपादक**

उज्जवल कुमार सिंह
प्रियंका यादव

❖ **सह- संपादक**

प्रतिभा
कुमारी प्रीति (एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर)
शिवम कुमार (एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर)

❖ **संशोधन समिति**

अंजना भारती
प्रवीण प्रजापति
अमित जायसवाल
प्रज्ञा पाण्डेय
जनमेजय राम
मनीष यादव
आकाश सिंह
धर्मेन्द्र कुमार
हनुमान राम
रवि यादव
मीरा (एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर)
सुग्रीव (एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर)
मानसी कन्नौजिया (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर)

❖ **दस्तावेज प्रबंधन**

वरुणा देवी

❖ **समन्वयक समिति**

सौरभ त्रिपाठी
सीता सुंदर सिंह
हेमलता

❖ **प्रबंध संपादक**

आरती तिवारी
स्तुति राय

रचना भेजने के लिए ईमेल पता :

bhashagharmgkvp@gmail.com

फ़ीडबैक के लिए ईमेल पता :

feedback.bhashaghar@gmail.com

❖ **सम्पादकीय पता**

शोध संवाद समूह
हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
उत्तर प्रदेश, 221002

❖ **मार्गदर्शक मंडल**

प्रो. अनुराग कुमार
प्रो. रामाश्रय सिंह
प्रो. अनुकूल चंद राय
डॉ. प्रीति
डॉ. सुरेन्द्र प्रताप सिंह

भाषाघर में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। उससे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

विषय सूची

शुभकामनाएँ

संपादकीय

बस तू मिरी आवाज़ में आवाज़ मिला दे : **उज्जवल कुमार सिंह** 1

आलेख

सेक्स (जेंडर से इतर अर्थों में) शिव, कामसूत्र और किन्नर समुदाय : **प्रियंका नारायण** 11

हिन्दी उपन्यासों में तृतीयलिंगी जीवन : **शशांक पाण्डेय** 20

हिन्दी उपन्यासों में तृतीयलिंगी विमर्श : **डॉ. अंजू कुमारी** 26

पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा : थर्ड जेंडर का आत्मसंघर्ष : **रीखा पटेल** 31

किन्नर समाज : सच्चाई के दहकते रूप : **डॉ. आशीष कुमार 'दीपांकर'**................................. 35

Third Gender Rights: A Call of Action: **Akanksha Singham**............................. 40

Importance of Books for LGBTQ Awareness in Children: **Akanksha Datta**......... 48

ट्रांसजेंडर बच्चों के लिए शिक्षा नीति : **डॉ. नीना छिब्बर** 58

भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का प्रभाव और तृतीयलिंगी समुदाय : **प्रियंका यादव** 68

कहानी

अपराजेय : **डॉ. आरती स्मित** 50

चिल्लर : **सोनू यशराज** 63

प्रो0 आनन्द कुमार त्यागी
कुलपति
Prof. Anand K. Tyagi
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी- 221002
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi - 221002

संदेश

प्रिय विद्यार्थीगण,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग के छात्रों द्वारा प्रकाशित "भाषाघर" पत्रिका के तृतीयलिंगी विमर्श विशेषांक के शुभारम्भ पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह विशेषांक समाज के एक महत्वपूर्ण, परंतु अक्सर उपेक्षित वर्ग के प्रति आपकी संवेदनशीलता और जागरूकता का प्रतीक है। तृतीयलिंगी समुदाय (हिजड़ा, किन्नर, अरावनी आदि) हमारे समाज का अभिन्न हिस्सा है, जिनकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई पहचान है। "भाषाघर" का यह विशेषांक इस समुदाय की आवाज़ को समाज की मुख्यधारा में लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

"भाषाघर" के इस विशेषांक में प्रकाशित लेख, कविताएँ, और अन्य रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे समाज के प्रति आपकी संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय के प्रति आपके समर्पण को भी दर्शाती हैं। यह विशेषांक तृतीयलिंगी समुदाय के जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और उनके संघर्षों को स्वीकारने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

मैं उन छात्रों की सराहना करता हूँ जिन्होंने इस विशेषांक के संपादन और प्रकाशन में अपनी मेहनत और समर्पण से योगदान दिया है। संपादकद्वय उज्जवल कुमार सिंह एवं प्रियंका यादव ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के वांछित विमर्शों के अलोक में इस अंक की परिकल्पना की, उन्हें आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ। आपके इस प्रयास में शिक्षकों का मार्गदर्शन और सहयोग भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके लिए मैं सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त करता हूँ। प्रो. निरंजन सहाय, डॉ. अविनाश कुमार सिंह के लिए विशेष शुभकामनाएँ, जिन्होंने इस रचनात्मक अभियान को नए तेवर से संपन्न किया। विभागाध्यक्ष प्रो. राजमुनि और विद्यार्थी समूह से यह अपेक्षा है कि भाषाघर का निरंतर प्रकाशन हो जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा और नए विमर्शों की उपस्थिति हो।

"भाषाघर" का यह विशेषांक समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मुझे विश्वास है कि आपकी यह पहल न केवल साहित्यिक जगत में बल्कि समाज में भी एक नया अध्याय लिखेगी। आपकी यह पत्रिका तृतीयलिंगी समुदाय के प्रति समाज की सोच को बदलने और उन्हें समानता और सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अंत में, मैं पुनः आप सभी को "भाषाघर" के तृतीयलिंगी विमर्श विशेषांक के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। आप इसी प्रकार सामाजिक और साहित्यिक मुद्दों पर संवेदनशील रहकर नए-नए सृजनात्मक प्रयास करते रहें।

22-2-24

प्रो0(ए0के0 त्यागी)
कुलपति

Tel : +91-542-2225472 (O), 2221268 (R), 2223160(Camp Off.), Fax : 2225472(O), 2221268 (R), e-mail: vcmgkvp@gmail.com

प्रो0 अनुराग कुमार
संकायाध्यक्ष
मानविकी संकाय

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी–२२१००२ (उ0प्र0)
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002 (U.P.)
☎+91 9532131478
E-mail:*dean.humanities@mgkvp.ac.in*

संदेश

प्रिय छात्र/छात्राएँ

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग के छात्रों द्वारा प्रकाशित "भाषाघर" पत्रिका के तृतीयलिंगी विमर्श विशेषांक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह विशेषांक संवेदनशील दृष्टिकोण और सामाजिक न्याय के प्रति हमारे प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

तृतीयलिंगी समुदाय हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिनकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई पहचान है। यह न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक समरसता, समानता और मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

"भाषाघर" का यह विशेषांक तृतीयलिंगी समुदाय के जीवन की वास्तविकताओं, उनकी समस्याओं, संघर्षों और उपलब्धियों को उजागर करेगा। इसके माध्यम से पाठक इस समुदाय की संवेदनाओं और उनकी जीवन यात्रा को समझ सकेंगे। यह पहल समाज में तृतीयलिंगी समुदाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करेगी और उन्हें सम्मान और समानता का अधिकार दिलाने में सहायक होगी।

इस विशेषांक में प्रकाशित लेख, कविताएँ और अन्य रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे समाज के प्रति संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय के प्रति समर्पण को भी दर्शाती हैं। यह विशेषांक तृतीयलिंगी समुदाय के जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और उनके संघर्षों को स्वीकारने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

मैं विशेष रूप से उन विद्यार्थियों का अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने इस विशेषांक के संपादन और प्रकाशन में अपनी मेहनत और समर्पण से योगदान दिया है। आपकी इस प्रयास में शिक्षकों का मार्गदर्शन और सहयोग भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके लिए मैं सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त करता हूँ।

"भाषाघर" का यह विशेषांक समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मुझे विश्वास है कि यह पहल न केवल साहित्यिक जगत में बल्कि समाज में भी एक नया अध्याय लिखेगी। यह पत्रिका तृतीयलिंगी समुदाय के प्रति समाज की सोच को बदलने और उन्हें समानता और सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अंत में, मैं पुनः आप सभी को "भाषाघर" के तृतीयलिंगी विमर्श विशेषांक के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। आप सभी इसी प्रकार सामाजिक और साहित्यिक मुद्दों पर संवेदनशील रहकर नए–नए सृजनात्मक प्रयास करते रहें।

12/08/24
प्रो0(अनुराग कुमार)
संकायाध्यक्ष